नमो नमो निम्मल दंसणस्स

3行(四)

भागः - १४

: संशोधक सम्पादकश्च

मुनि दीपरत्नसागर

Jain Education International

For Private & Personal Use Onl

www.jainelibrary.org





बालब्रह्मचारी श्री नेमिनाथाय नमः नमो नमो निम्मल दंसणस्स श्री आनंद-क्षमा-ललित-सुशील-सुधर्मसागर गुरूभ्योनमः

आगम सुत्ताणि (सटीकं)

भागः-१४

निरयार्वातेकाउपाङ्गसूत्रं, कल्पवर्तीसेकाउपाङ्गसूत्रं, पुष्पिकाउपाङ्गसूत्रं, पुष्पचृतिकाउपाङ्गसूत्रं, वृष्णिदशाउपाङ्गसूत्रं

चतुःशरणप्रकीर्णकसूत्रं, महाप्रत्याख्यानप्रकीर्णकसूत्रं, तंदुत्तवैचारिकप्रकीर्णकसूत्रं, गच्छाचारप्रकीर्णकसूत्रं, देवेन्द्रस्तवप्रकीर्णकसूत्रं, अतुरप्रत्याख्यानप्रकीर्णकसूत्रं, भक्तपरिज्ञा प्रकीर्णकसूत्रं संस्तारकप्रकीर्णकसूत्रं गणिविद्याप्रकीर्णकसूत्रं मरमसमाधिप्रकीर्णकसूत्रं

-ः संशोधकः सम्पादकश्चः :-

मुनि दीपरत्नसागर

ता. १४/४/२०००

रविवार २०५६

चैत्र सुद ११

४५- आगम सुत्ताणि-सटीके मूल्य रू.११०००/-

🛂 आगम श्रुत प्रकाशन 🛂

∹ संपर्क स्थल :−

''आगम आराधना केन्द्र'' शीतलनाथ सोसायटी विभाग-१, फ्लेट नं-१३, ४-थी मंझिल, ब्हायसेन्टर, खानपुर, अहमदाबाद (गुजरात)





| आगमाः-१९३३ विषयानुक्रमः | | | | | | | |
|-------------------------|---|------------|------------------|--------------------------|------------|--|--|
| मूलाङ्कः | विषयः | वृष्ठाङ्कः | मूलाङ्क: | विषयः | पृष्ठाङ्कः | | |
| | १९ नियावलिकाउपाङ्गसूत्रस्य विषयानुक्रमः | | | | | | |
| 9-98 | १-१९ अध्ययन-१ कालः ५ -२१ अध्ययनानि-३१० २६ | | | | | | |
| -२० | अध्ययनं-२ सुकालः | २६ | | कृष्णः, सुकृष्णः इत्यादि | | | |
| • | २० कल्पवतंसि | ग्राउप | ङ्गसूत्रस | य विषयानुक्रमः | , , , | | |
| 9 | अध्ययनं-१ पद्मः | ঽড় | રૂ-પ્ | अध्ययनानि-३१० | २८ | | |
| - - -> | अध्ययनं-२ महापद्मः | २८ | | भद्रः, समुद्रः इत्यादि | | | |
| | २१ पुष्पिकार | उपाङ्गर | <u>र</u> ूत्रस्य | विषयानुक्रमः | | | |
| 9-3 | अध्ययनं-१ चन्द्रः | ३० | -9 | अध्ययनं-५ पूर्णभद्रः | 86 | | |
| -8 | अध्ययनं-२ सूर्यः | ३२ | -90 | अध्ययनं-६ माणिभद्रः | ४८ | | |
| ي. | अध्ययनं-३ शुक्रः | ३२ | -99 | अध्ययनानि-७१० | ४९ | | |
| C | अध्ययन-४ बहुपुत्रिका | ४० | | दत्तः, शिवः इत्यादि | | | |
| | २२ पुष्पचूलिक | गउपाइ | १सूत्रस्य | विषयानुक्रमः | : | | |
| 9-3 | अध्ययने-१ भूता | ५० | -3 | अध्ययनानि-२१० | બર | | |
| | २३ वृष्णिदशा | उपाङ्ग | सूत्रस्य | विषयानुक्रमः | | | |
| 9-३ | अध्ययनं-१ निषदः | ५३ | ૪- ધ | अध्ययनानि-२१२ | ي. | | |
| : | २४ चतुःशरणप्र | कीण | र्कसूत्रस | य विषयानुक्रमः | | | |
| 3-19 | अवश्यक-अर्थाधिकारः | نبد | - ५૪ | दुष्कृतगही | 198 | | |
| -१ | मंगल-आदिः | ξο | 4 | सुकृत-अनुमोदना | છ'૭ | | |
| -84 | चतुःशरणं | ६३ | -& PX | उपसंहारः | ઉ૮ | | |
| | २५ आतुरप्रत्याख्य | नप्रकी | र्णिकसू | त्रस्य विषयानुक्रमः। | | | |
| 9-90 | प्रथमा-प्ररुपणा | 198 | - አር | असमाधिमरणं | ८६ | | |
| -33 | प्रतिक्रमणादि आलोचना | ८ ٦ | -199 | पंडितमरण एवं | 66 | | |
| -3£ | आलोचनादायकः-ग्राहकः | ८६ | | आराधनादिः | | | |

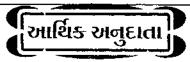
| मूलाङ्कः | विषय: | पृष्ठाङ्कः | मूलाङ्कः | विषयः | पृष्ठाङ्कः | |
|----------|--|------------|------------------|--------------------------|------------|--|
| | २६ महाप्रत्याख्या | नप्रकी | र्णकसू | त्रस्य विषयानुक्रमः | | |
| 9-2 | मङ्गलं | ९३ | -96 | भावना | ९४ | |
| -19 | व्युत्सर्जन, क्षमापनादि | ९३ | -३६ | मिथ्यात्वत्याग, आलोचनादि | ९५ | |
| -9२ | निन्दा-गर्हाआदि | ९४ | -485 | विविधं धर्मोपदेशादि | ९७ | |
| | २७ भक्तपरिज्ञाप्रकीर्णकसूत्रस्य विषयानुक्रमः | | | | | |
| 9-8 | मङ्गलं, ज्ञानमहत्ता | 990 | -२३ | आलोचना प्रायश्चित् | 999 | |
| ي- | शाश्वत अशाश्वत सुखं | 990 | -33 | व्रत-सामायिक-आरोपणं | 993 | |
| -99 | मरण भेदानि | 999 | -9७३ | आचरणा, क्षमापना आदि | 998 | |
| | २८ तन्दुलवैचारिकप्रकीर्णकसूत्रस्य विषयानुक्रमः | | | | | |
| 9-३ | मङ्गलं-द्वाराणि | 939 | -७४ | देहसंहननं-आहारादि | 950 | |
| ල- | गर्भः-प्रकरणं | १३३ | -९५ | काल-प्रमाणं | १६५ | |
| -५७ | जीवस्यदशदशा | १३४ | -9 9 Ę | अनित्य, अशुचित्वादि | १७६ | |
| -६४ | धर्मीपदेश एवं फलं | १५० | -9६9 | उपदेशः, उपसंहारः | १९४ | |
| | २९ संस्तारकप्र | कीर्णव | त्सूत्रस् | । विषयानुक्रमः | | |
| 9-30 | मङ्गलं, संस्तारकगुणाः | १९५ | -66 | संस्तारकस्य दृष्टान्ताः | २०१ | |
| - ५५ | संस्तारकस्वरूपं, लाभं | १९८ | -933 | भावना | २०५ | |
| | ३० गच्छाचारप्र | कीर्णव | हसूत्रस् | प विषयानुक्रमः | | |
| 9-2 | मङ्गलं-आदि | २०९ | -9०६ | गुरुस्वरूपं | २२३ | |
| -દ્ | गच्छे वसमानस्य गुणाः | २१० | -938 | आर्यास्वरूपं | २४६ | |
| -80 | आचार्यस्वरूपं | २१० | -9 ३७ | उपसंहार: | २५६ | |
| | ३१ गणिविद्याप्र | कीर्णव | कसूत्रस | य विषयानुक्रमः | | |
| 9-3 | प्रथमंद्वारं-दिवसं | २५९ | -لوح | षष्ठंद्वारं-मुहूर्त | २६४ | |
| -90 | द्वितीयंद्वारं-तिथिः | २५९ | -६३ | सप्तमंद्वारं-शकुनबलं | २६६ | |
| -89 | १ तृतीयंद्वारं-नक्षत्रः | | -199 | अष्टमंद्वारं लग्नः . | २६६ | |
| -४६ | चतुर्थद्वार-करणं | २६४ | -८४ | नवमंद्वारं-निमित्तबलं | २६७ | |
| -४८ | पश्चमंद्वारं-ग्रहः | २६४ | -૮५ | उपसंहारः | २६९ | |

| मूलाङ्कः | विषय: | पृष्टाङ्कः | मूलाङ्कः | विषयः | पृष्ठाङ्कः | | |
|---|--|------------|---------------|----------------------|------------|--|--|
| | ३२ देवेन्द्रस्तवप्रकीर्णकसूत्रस्य विषयानुक्रमः | | | | | | |
| 9-99 | मङ्गलं, देवेन्द्रपृच्छा | २७० | ২৩३ | वैमानिक-अधिकारः | २८९ | | |
| -६६ | भवनपति अधिकारः | २७१ | -३०२ | इसिप्रभापृथ्वि एवं | 309 | | |
| -८० | वाणव्यन्तर अधिकारः | ২৩৩ | | सिद्धाधिकारः | | | |
| -989 | ज्योतिप्क-अधिकारः | ২ড९ | - ३० ७ | जिनऋध्यः, उपसंहारः | ३०५ | | |
| ३३ मरणसमाधिप्रकीर्णकसूत्रस्य विषयानुक्रमः | | | | | | | |
| 9-90 | मरणविधिः आरम्भः | ३०६ | -২५७ | आतुरप्रत्याख्यानादि | ३३० | | |
| -८३ | आराधना, मरणस्यरूपं | ३०७" | -२६६ | पश्चमहाव्रतस्यरक्षा | ३३६ | | |
| -65 | आचार्यस्य गुणाः | ३१६ | -४१२ | आराधना, उपदेश आदिः | ३३७ | | |
| -9२६ | आलोचनावर्णनं | રૂ૧૭ | ٠٩٥٠ | विविध-उदाहरणादि | ३५४ | | |
| -9२८ | तपसः भेदाः | ३२० | -५५० | मरणभेदानि निरुपण | ३६७ | | |
| -946 | ज्ञानादि गुण वर्णनं | ३२१ | -५६९ | आराधना-अनुचिंतन | ₹60 | | |
| -9198 | आत्मनः शुद्धि | ३२३ | -६३९ | द्वादश-भावना | ३७२ | | |
| -२०७ | संलेखना | ३२६ | -६६४ | पण्डितमरणं, उपसंहारः | 370 | | |

भागः-१४

आगमाः-१९.....३३ पर्यन्ताः

- निरयावलिकादिउपाङ्गपञ्चक -
 - दशप्रकिर्णकानि -



-૫.પૂ. માલવભુષણ તપસ્વી આચાર્યદેવ શ્રી નવરત્નસાગર સૂરીશ્વરજી મ.સા.ની પ્રેરણથી શ્રી લાલભાઈ દેવચંદ શાહ તરફથી - નકલ એક.

ન્ય.પૂ. સરળ સ્વભાવી-શ્રીમદ્ ભગવતીસૂત્ર વ્યાખ્યાન પટુ આચાર્યદેવ શ્રી નરદેવસાગરસૂરીશ્વરજી મ.સા. તથા પૂજ્યશ્રીના શિષ્યરત્ન તપસ્વી ગણિવર્ચશ્રી ચંદ્રકીર્તિસાગરજી મ.સા.ની પ્રેરણાથી શ્રી પુરુષાદાનીય પાર્શ્વનાથ શ્રે. મૂર્તિ. જેન સંઘ, દેવકીનંદન સોસાયટી, અમદાવાદ તરફથી નકલ એક.

-૫.પૂ. શાસન પ્રભાવક-ક્રિયારાગી આચાર્યદેવશ્રી વિજય ૠચકરાંદ્ર સૂરીશ્વરજી મ.સા.ની પ્રેરણાથી એક સદ્ગૃહસ્થ તરફથી નકલ એક.

-૫.પૂ. સાહિત્યપ્રેમી મુનિરાજ શ્રી સર્વોદય સાગરજી મ.સા.ની પ્રેરણાથી-"અચલગચ્છાદ્વિપતિ ૫.પૂ.આ.ભ.શ્રી ગુણસાગરસૂરીશ્વરજી મ.સા.ના શિષ્યરત્ન ૫.પૂ. મુનિરાજ શ્રી ચારિગરત્નસાગરજી મ. ની ૧૯મી અહાઇ નિમિત્તે-શ્રી ચારિગરત્ન ફા.ચે.ટ્રસ્ટ તરફથી નકલ એક.

-૫.પૂ. વૈયાવૃત્ત્યકારિકા સાધ્વી શ્રી મલયાશ્રીજી મ.સા.ના શિષ્યા વ્યવહાર વિચક્ષણા પૂ. સાધ્વી શ્રી હિતજ્ઞાશ્રીજી મ.ની પ્રેરણાથી જેન આરાધના મંદિર-"જ્ઞાનખાતા" તરફથી નકલ એક.

-૫.પૂ. સોમ્યમૂર્તિ સાધ્વીશ્રી સોમ્યગુણાશ્રીજી મ.ની પ્રેરણાથી ૫.પૂ. ગુરુમાતા-વાત્સલ્યમૂર્તિ સા.શ્રી રત્નત્રયાશ્રીજી મ.ની પંચમી પુન્યતિથિ નિમિત્તે શ્રીમતી લીલમબેન પ્રાણલાલ પી. દામાણી તરફથી નકલ એક.

-૫.પૂ. સ્વનામધન્યા સા. શ્રી સોમ્યગુણાશ્રીજી તથા તેઓના શિષ્યા સા.શ્રી સમજ્ઞાશ્રીજીની પ્રેરણાથી-૨૦૫૩ના ચશસ્વી ચાતુર્માસ નિમિત્તે શ્રી પાર્શ્વપદ્માવતી જૈન સંઘ, પારૂલનગર, અમદાવાદ તરફથી નકલ બે.

-૫.પૂ. રત્નગયારાધકા સાધ્વીશ્રી સોમ્યગુણાશ્રીજી તથા તેઓશ્રીના શિષ્યા સા. શ્રી સમજ્ઞાશ્રીજીની પ્રેરણાથી સંવત ૨૦૫૪ના નિર્મળ આરાધનામય ચાતુર્માસની સ્મૃતિમાં-ઘાટલોડિયા (પાવાપુરી) જેન શ્વે. મૂર્તિ. સંઘ, અમદાવાદ તરફથી નકલ એક. -૫.પૂ. સાધ્વી શ્રી રત્નગયાશ્રીજી મ.ના પરમ વિનેચા સા.શ્રી સોમ્યગુણશ્રીજીની પ્રેરણાથી તેઓના સંસારીભાઈશ્રી ઇન્દ્રવદનભાઈ દામાણીના અનુમોદનીય પુરુષાર્થથી "આગમ દીપ-સંપુટ"ના બદલામાં પ્રાપ્ત રક્મમાંથી-નક્લ ચાર.

-૫.પૂ. પ્રશમરસનિમગ્ના સાધ્વીશ્રી પ્રશમશીલાશ્રીજી મ.ની પ્રેરણાથી-સમ્મેતશિખર તિર્થો દ્ધારિકા ૫.પૂ. સાધ્વીશ્રી રંજનશ્રીજી મ.સા.ના શિષ્યા અપ્રતિમ વૈયાવૃત્ત્યકારિકા સા.શ્રી મલયાશ્રીજી તત્ શિષ્યા સા. શ્રી નરેન્દ્રશ્રીજી-તત્ શિષ્યા સા. શ્રી પ્રગુણાશ્રીજી મ.ના. આત્મશ્રેયાર્થે-અરિહંત ટાવર, જેન સંઘ, મુંબઇ તરફથી નકલ એક.

-૫.પૂ. આગમોદ્ધારક આચાર્યદેવશ્રી ના સમુદાયવર્તી ૫.પૂજ્ય પૈયાવૃત્ત્યકારિકા સા.શ્રી મલયાશ્રીજી મ.ના શિષ્યા પૂ.સા. શ્રી કૈવલ્યશ્રીજી મ.ના શિષ્યા પૂ.સા.શ્રી ભવ્યાનંદશ્રીજી મ.સા.ના સુશિષ્યા મિષ્ટભાષી સાધ્વીશ્રી પૂર્ણપ્રજ્ઞાશ્રીજી મ.સા. તથા તેમના વિનિત શિષ્યા સા. શ્રી પૂર્ણદર્શિતાશ્રીજી તથા સા. પૂર્ણનંદીતાશ્રીજીની પ્રેરણાથી-સર્વોદય પાર્શ્વનાથ ચેરીટેબલ ટ્રસ્ટ, મુલુન્ડ મુંબઇ તરફથી નકલ એક.

-૫.પૂ. વેચાવૃત્ત્યકારિકા સાધ્વીશ્રી મલચાશ્રીજી મ.ના પ્રશિષ્યા સા. શ્રી ભવ્યાનંદશ્રીજીમ.ના સુવિનિતા સા.શ્રી કલ્પપ્રજ્ઞાશ્રીજી તથા કોકીલકંઠી સા. શ્રી કૈરવપ્રજ્ઞાશ્રજી ની પ્રેરણાથી -મેહુલ સોસાયટી, આરાધનાભવન, સુભાષનગર, વડોદરાની બહેનો તરફથી નકલ એક

- -શ્રી વિશાશ્રીમાળી તપગચ્છજ્ઞાતિ-જ્ઞાનખાતું, જેન પાઠશાળા, જામનગર તરફથી નકલ છે.
- -શ્રી મંગળ પારેખનો ખાંચો-જેન શે. મૂર્તિ. સંઘ, અમદાવાદ. તરફથી ૨૦૫૪ના ચાતુર્માસ નિમિત્તે નક્લ બે.
 - શ્રી આકોટા જેન સંઘ, વડોદરાની બહેનો તરફથી નકલ એક.
- -શ્રીમતી નયનાબેન રમેશચંદ્ર શાહ, વડોદરાની પ્રેરણાથી આગમોના સેટના બદલામાં પ્રાપ્ત રકમમાંથી નકલ પાંચ.

શેષ સર્વે રકમ "અમારા"આજ પર્યન્ત પ્રકાશનોના બદલામાં પ્રાપ્ત થયેલી છે.

नमो नमो निम्मल दंसणस्स पंचम गणभर श्री सुपर्मास्वामिने नमः

२० कल्पवतंसिका-उपाङ्गसूत्रम्

सटीकं

(नवमं उपाङ्गम्)

(मूलसूत्रम् + चंद्रसूरिविरचिता वृत्तिः)

अध्ययनं-१ पर्घ

मू. (१) जित णं भंते ! समणेणं भगवया जाव संपत्तेणं उवंगाणं पढमस्स वग्गस्स निरयावित्याणं अयमट्टे पञ्चते, दोद्यस्स णं भंते! वग्गस्स कप्पवर्डिसियाणं समणेणं जाव संपत्तेणं कइ अञ्झयणा पञ्चता ? एवं खलु जंबू! समणेणं भगवया जाव संपत्तेणं कप्पवर्डिसियाणं दस अञ्झयणा पञ्चता, तं जहा—पउमे १ महापउमे २ भद्दे ३ सुभद्दे ४ पउमभद्दे पउमसेने ६ पउमगुम्पे ७ निलिनिगुम्पे ८ आनंदे ९ नंदने १०।

जइ णं भंते समणेणं जाव संपत्तेणं कप्पविडिसियाणं दस अज्झयणा पन्नता, पढमस्स णं भंते! अज्झयणस्स कप्पविडिसियाणं समणेणं भगवया जाव के अहे पन्नते? एवं खलु जंबू! तेणं कालेणं तेणं समएणं चंपा नामं नयरी होत्था। पुत्रभद्दे चेइए। कूणिए राया। पउमावई देवी।

तत्य णं चंपाए नयरीए सेणियस्स रत्नो भज्जा कूणियस्स रत्नो चुल्लमाउया काली नामं देवी होत्था, सुकुमाला । तीसे णं कालीए देवीए पुत्ते काले नामं कुमारे होत्था, सुकुमाले ।

तस्स णं कालस्स कुमारस्स पउमायई नामं देवी होत्या, सोमाला जाव विहरति । तते णं सा पउमायई देवी अन्नया कयाई तंसि तारिसगंसि वासघरंसि अब्भितरतो सचित्तकम्मे जाव सीहं सुमिणे पासित्ता णं पडिबुद्धा, एवं जम्मणं जहा महाबलस्स, जाव नामधिज्ञं, जम्हा णं इमे दारए कालस्स कुमारस्स पुत्ते पउमायईए देवीए अत्तए तं होउ णं अम्हं इमस्स दारगस्स नामधिज्ञं पउमे पउमे, सेसं जहा महब्बलस्स अङ्गओ दातो जाय उपिं पासायवरगते विहरति ।

सामी समोसरिए। परिसा निग्गया। कूणिते निग्गते। पउमे वि जहा महब्बले निग्गते तहेव अम्मापिति आपुच्छणा जाव पव्वइए अनगारे जाए जाव गुत्तबंभयारी।

तते णं से पउमे अनगारे समणस्स भगवओ महावीरस्स तहारूवाणं थेराणं अंतिए सामाइयमादियाइं एक्कारस अंगाइं अहिज्जइ, अहिज्जिता बहूहिं चउत्थछट्टडम जाव विहरित । तते णं से पउमे अनगारे तेणं ओरालेणं जहा मेहो तहेव धम्मजागिरया चिता एवं जहेव मेहो तहेव समणं भगवं आपुच्छिता विउले जाव पाओवगते समाणे तहारूवं थेराणं अंतिए सामाइयमाइयाइं एक्कारस अंगाइं, बहुपडिपुण्णाइं पंच वासाइं सामन्नपिरयाए, मासियाए संलेहणाए सिट्टं भत्ताइं आनुपुव्वीए कालगते, थेरा ओत्तिन्ना भगवं गोयमं पुच्छइ, सामी कहेइ जाव सिट्टं भत्ताइं अनसनाए छेदिता आलोइय० उहुं चंदिमसोहम्मे कप्पे देवत्ताए उववन्ने दो सागराइं।

से णं भंते ! पउमे देवे तातो देवलोगातो आउक्खएणं पुच्छा, गोयमा ! महाविदेहे वासे जहा दढपइन्नो जाव अंतं काहिति । तं एवं खलु जंबू ! समणे णं जाव संपत्तेणं कप्पविडेंसियाणं पढमस्स अञ्झयणस्स अयमट्टे पन्नते ति बेमि ।।

अध्ययनं-१ समाप्तम् अध्ययनं-२ महापरां

मू. (२) जइ णंभेते! समणेणं भगवया जाव संपत्तेणं कष्पविडिसियाणं पढमस्स अन्झयणस्स अयमड्डे पन्नत्ते, दोद्यस्स णं भंते अज्झयणस्स के अड्डे पन्नत्ते ? एवं खलु जंबू तेणं कालेणं २ चंपा नाम नगरी होत्या, पुत्रभद्दे चेइए, कृणिए राया, पउमावई देवी।

तत्थ णं चंपाए नयरीए सेणियस्स रत्नो भज्ञा कोणियस्स रत्नो चुल्लमाउया सुकाली नामं देवी होत्था। तीसे णं सुकालीए पुत्ते सुकाले नामं कुमारे।

तस्स णं सुकालस्स कुमारस्स महापउमा नामं देवी होत्या, सुकुमाला ।

तते णं सा महापउमा देवी अन्नदा कयाई तंसि तारिसगंसि एवं तहेव महापउमे नामं दारते, जाव सिन्झिहित्ति, नवरं ईसाने कप्पे उववाओं उक्कोसिट्टईओ, तं एवं खलु जंबू! समणेणं भगवया जाव संपत्तेणं०।

अध्ययनं–२ समाप्तम् अध्ययनानि–३....१०

मू. (३) एवं सेसा वि अड्ड नेयव्या । मातातो सरिसनामाओ । कालादीणं दसण्हं पुत्ता आनुपूर्व्वीए—

पू. (४) दोण्हं च पंच चत्तारि, तिण्हं तिण्हं च होंति तिन्नेव । दोण्हं च दोन्नि वासा, सेणियनत्तूण परियातो ।।

मू. (५) उववातो आनुपुञ्चीते, पढमो सोहम्मे, बितितो ईसाने, तिततो सणंकुमारे, चउत्थी माहिंदे, पंचमओ बंभलोए, छड्डो लंतए, सत्तमओ महासुक्के, अड्डमओ सहस्सारे, नवमओ पाणते, दसमओ अद्युए। सञ्चत्थ उक्कोसठिई भाणियञ्चा, महाविदेहे सिद्धे।।

षृ. श्रेणिकनप्तृणां—पौत्राणां कालमहाकालाद्यङ्गजानां क्रमेण व्रतपर्यायाभिधायिका 'दोण्हं च पंच' इत्यादिगाथा, अस्या अर्थः—दससु मध्ये द्वयोराद्ययोः कालसुकालसत्कयोः पुत्रयोर्व्रतपर्यायः पश्च वर्षाणि, त्रयाणां चत्वारि, त्रयाणां त्रीणि, द्वयोर्द्धे—द्वेवर्षे व्रतपर्यायः । तत्राद्यस्य यः पुत्र पद्मनामा स कामान् परित्यज्य भगवतो महावीरस्य समीपे गृहीतव्रत एकादशाङ्गधारी भूत्वाऽत्युग्रं बहु चतुर्थषष्ठाष्टमादिकं तपःकर्म कृ त्वाऽतीव शरीरेण कृशीभूतश्चिन्तां कृतवान्—यावदित्ति मे वलवीर्यादिशक्तिस्तावद्भगवन्तमनुज्ञाप्य भगवदनुज्ञया ममपादपोपगमनं कर्तुं श्रेय इति तथैवासौ समनुतिष्ठति, ततोऽसौ पञ्चवर्षव्रतपालनपरो मासिक्या संलेखनया कालगतः सौधर्मे देवत्वेनोत्पन्नो द्विसागरोपमस्थितिकस्ततश्चयुत्वा महाविदेह उत्पद्य सेत्स्यते (ति) ।

एवं सुकालसत्कमहापद्मदेव्याः पुत्रस्य महापद्मस्यापीयमेव वक्तव्यता, स भगवत्समीपे

गृहीतव्रतः पञ्चवर्षव्रतपर्यायपालनपर एकादशाङ्गधारी चतुर्धषष्ठाष्टमादि बहु तपःकर्म कृत्वा ईशानकल्पे देवः समुत्पन्नो द्विसागरोपमस्थितिकः सोऽपि ततश्चयुतो महाविदेहे सेत्स्यतीति ।

तृतीये महाकालसत्कपुत्रवक्तव्यता, चतुर्थे कृष्णकुमारसत्कपुत्रस्य, पश्चमे सुकृष्णसत्क-पुत्रस्य वक्तव्यता इत्येवं त्रयोऽप्येते वर्षचतुष्ट्यव्रतपर्यायपरिपालनपरा अभूवन्।

एवं तृतीयो महाकालाङ्गजश्चतुर्वर्षव्रतपर्यायः सनत्कुमारे उत्कृष्टस्थितिको देवो भूत्वा सप्त सागरोपमाण्यायुरनुपाल्य ततश्चयुतो महाविदेहे सेत्स्यतीति चतुर्थे कृष्णकुमारात्मजश्चतुर्वर्ष-व्रतपर्यायः माहेन्द्रकल्पे देवो भूत्वा सप्त सागरोपमाण्यायुरनुपालय ततश्च्युतो महाविदेहे सेत्स्य-तीति) ।

पञ्चमः सुकृष्णसत्कपुत्रो वर्षचतुष्टयं व्रतपर्यायं परिपाल्य ब्रह्मलोके पञ्चमकल्पे दश सागरानुत्कृष्टमायुरनुपाल्य ततश्चयुतो महाविदेहं सेत्यतीति !

षष्ठाध्ययने महाकृष्णसत्कपुत्रस्य वक्तव्यता, सप्तमे वीरकृष्णसत्कपुत्रस्य, अष्टमे रामकृष्ण-सत्कपुत्रस्य वक्तव्यता। तत्र त्रयोऽप्येते वर्षत्रयव्रतपर्यायपरिपालनपरा अभूवन्। एवं च महाकृष्णा-कृजो वर्षत्रयपर्यायाञ्चान्तककल्पे षष्ठे उत्पद्य चतुर्दशसागरोपमाण्युत्कृष्टस्थितिकमायुरनुपाल्य ततश्युत महाविदेहे सेत्स्यतीति।

वीरकृष्णाङ्गजः सप्तमः वर्षत्रयं व्रतपर्यायं परिपाल्य महाशुक्रेसप्तमे कल्पे समुखद्य सप्तदश सागराण्यायुरनुपाल्य ततश्चयुतो विदेहे सेल्यतीति ।

रामकृष्णाङ्गजोऽष्टमो वर्षत्रयं व्रतपर्यायं परिपाल्य सहारेऽष्टमे कल्पेऽष्टादशं सागराण्या-युरनुपाल्य ततश्चयुतो विदेहे सेत्स्यतीति ।

पितृसेनकृष्णाङ्गजो नवमो वर्षद्वयव्रतपर्यायपरिपालनं कृत्वा प्राणतदेवलोके दशमे उत्पद्य एकोनविंशति सागरोपमाण्यायुरनुपाल्य ततश्चयुतो विदेहे सेत्स्यतीति ।

महासेनकृष्णाङ्गजश्च दशमो वर्षद्वयव्रतपर्यायपालनपरोऽनशनादिविधिनाऽच्युते द्वादशे देवलोके समुत्पद्य द्वाविंशतिसागरोपमाण्यायुरनुपाल्य ततश्चयुतो महाविदेहे सेत्स्यतीति ।

इत्येवं कल्पावतंसकदेवप्रतिबद्धग्रन्थपद्धति कल्पावतंसिकेत्युच्यते । (ता एताः परिसमाप्ताः द्वितीयवर्गश्च)

अध्ययनानि-३.....१० समाप्तानि

२० नवमंउपाङ्गम्-कल्पवतंसिका समाप्तम्

मुनि दीपरत्नसागरेण संशोधिता सम्पादिता कल्पवतंसिका उपाङ्गस्त्रस्य चन्द्रस्रिविरचिता टीका परिसमाप्ता ।

米米米

ભાવભરી વંદના

જેમના દ્વારા સૂત્રમાં ગુંથાયેલ જિનવાણીનો ભવ્ય વારસો વર્તમાનકાલીન ''આગમસાહિત્ય''માં પ્રાપ્ત થયો એ સર્વે સ્રિવિર આદિ આર્ષ પૂજ્યશ્રીઓને-

| · · · · · · · · · · · · · · · · · · · | | | | |
|---------------------------------------|-------------------------|------------------------------------|--------------------|--|
| | . શ્રી સુધર્મા સ્વામી | ચૌદ પૂર્વધર શ્ર | ી ભદ્ધાહુ સ્વામી | |
| દશ પૂર્વધ૨ | શ્રી શય્યંભવસૂરિ | (અનામી) સર્વે શ્રુત સ્થવીર મહર્ષિઓ | | |
| દેવવ | દેવવાચક ગણિ | | <u>ધામાચાર્ય</u> | |
| દેવર્દ્ધિગા | દેવર્દ્ધિગણિ ક્ષમાશ્રમણ | | ણિ ક્ષમાશ્રમણ | |
| સંઘ | સંઘદાસગણિ | | સેન ગણ <u>િ</u> | |
| જિનદાસ | <u>ગણિ</u> મહત્તર | અગત્સ | પસિંહ સૂર <u>િ</u> | |
| શીલ | તાંકાચાર્ય | અભયદેવસૂરિ | | |
| મલય | િગિરિસ્ રિ | ક્ષેમકીર્તિસૂર <u>િ</u> | | |
| હરિ | ભદ્રસૂરિ | આર્યરક્ષિત સુરિ (?) | | |
| દ્રો | ગ્રાચાર્ય | ચં | દ્ર સુરિ | |
| વાદિવેતાલ | ા શાંતિચંદ્ર સૂરિ | મલ્લધારી હેમચંદ્રસૂરિ | | |
| શાંતિચં | દ્ર ઉપાધ્યાય | ધર્મસાગર ઉપાધ્યાય | | |
| ગુણ | ગુણરત્નસૂરી | | વેમલગણિ | |
| વીરભદ્ર | ઋષિયાલ | બ્રહ્મમુનિ | તિલક્સૂરિ | |
| | .1 | | | |

સ્ત્ર-નિર્યુક્તિ - ભાષ્ય - ચૂર્ણિ - વૃત્તિ - આદિના ૨ચયિતા અન્ય સર્વે પૂજ્યશ્રી

વર્તમાન કાલિન આગમ સાહિત્ય વારસાને સંશોધન-સંપાદન-લેખન આદિ દ્વારા મુદ્રીત/અમુદ્રીત સ્વરૂપે રજૂ કર્તા સર્વે શ્રુતાનુરાગી પૂજ્યપુરૂષોને

| ચંદ્રસાગર સૂરિજી | મુનિ માણેક |
|---------------------|--------------------------|
| પુન્યવિજયજ <u>ી</u> | ચતુરવિજયજી |
| અમરમુનિજી | કનૈયાલાલજી |
| આચાર્ય તુલસી | ચંપક સાગરજી |
| | પુન્યવિજયજી અમરમુનિજી |

સ્મરણાંજલિ

| બાબુ ધનપતસિંહ | પં૦ બેચરદાસ | પં૦ જીવરાજભાઈ |
|---------------|-----------------------------|---------------|
| પં૦ ભગવાનદાસ | યં૦ રૂપેન્દ્રકુમાર | પં૦ હીરાલાલ |
| | શ્રુત પ્રકાશક સર્વે સંસ્થાઓ | |

· (૪૫ આગમ મૂળ તથા વિવરણનું શ્લોક પ્રમાણદર્શક કોષ્ટક)

| क्रम | आगमसूत्रनाम | मूल | वृत्ति-कर्ता | वृत्ति |
|------|----------------------|--------------|------------------------------|-------------|
| | | श्लोक प्रमाण | - | श्लोकप्रमाण |
| 9. | आचार | २५५४ | शीलाङ्काचार्य | 92000 |
| ٦. | सूत्रकृत | 2900 | शीलाङ्काचार्य | १२८५० |
| ₹. | स्थान | ३७०० | अभदेवसूरि | १४२५० |
| ٧. | समवाय | १६६७ | अभयदेवसूरि | રૂ ५७५ |
| 4. | भगवती | 94049 | अभयदेवसूरि | १८६१६ |
| ξ. | ज्ञाताधर्मकथा | ५४५० | अभयदेवसूरि | ३८०० |
| છ. | उपासकदशा | ८१२ | अभयदेवसूरि | ۷00 |
| ۷. | अन्तवृद्दशा | ९०० | अभयदेवसूरि | ४०० |
| ٩, | अनुत्तरोपपातिकदशा | १९२ | अभयदेवसूरि | 900 |
| 90. | प्रश्नव्याकरण | 9300 | अभयदेवसूरि | ५६३० |
| 99. | विपाकश्रुत | १२५० | अभयदेवसूरि | ९०० |
| 97. | औपपातिक | ११६७ | अभयदेवसूरि | ३१२५ |
| 93. | राजप्रश्निय | २१२० | मलयगिरिसूरि | 3000 |
| 98. | जीवाजीवाभिगम | ४७०० | मलयगिरिसूरि | 98000 |
| 94. | प्रज्ञापना | ७७८७ | मलयगिरिसूरि | 98000 |
| 94. | सूर्यप्रज्ञप्ति | २२९६ | मलयगिरिसूरि | ९००० |
| 99. | चन्द्रप्रज्ञप्ति | २३०० | मलयगिरिसूरि | ९१०० |
| 96. | जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति | ४४५४ | शान्तिचन्द्रउपाध्याय | 92000 |
| १९थी | निरयावलिका | 9900 | चन्द्रसूरि | ६०० |
| २३. | (पश्च उपाङ्ग) | | <u> </u> | |
| २४. | चतुःशरण | ८० | विजयविमलयगणि | (?) २०० |
| २५. | आतुर प्रत्याख्यान | 900 | गुणरलसूरि (अवचूरि) | (?) 940 |
| २६. | महाप्रत्याख्यान | १७६ | आनन्दसागरसूरि (संस्कृतछाया) | १७६ |
| २७. | भक्तपरिज्ञा | २१५ | आनन्दसागरसूरि (संस्कृतश्रवा) | २१५ |
| २८. | तन्दुल वैचारिक | 400 | विजयविमलगणि | (?) 400 |
| २९. | संस्तारक | 944 | गुणरल सूरि (अवचूरि) | 990 |
| ₹0. | गच्छाचार* | १७५ | विजयविमलगणि | १५६० |
| 39. | गणिविद्या | १०५ | आनन्दसागरसूरि (संस्कृतकाया) | ૧૦૫ |

| क्रम | आगमसूत्रना म | • मूल श्लोक प्रमाण | वृत्ति-कर्ता | • वृत्ति श्लोकप्रमाण |
|-------------|---------------------|-----------------------|------------------------------|-------------------------|
| ३ २. | देवेन्द्रस्तव | ३७५ | आनन्दसागरसूरि (संस्कृत छाया) | ३७५ |
| ३ ३. | मरणसमाधि 🛨 | ८३७ | आनन्दसागरसूरि (संस्कृत छावा) | ८३७ |
| ₹8. | निशीथ | ८२१ | जिनदासगणि (चूर्णि) | २८००० |
| <u> </u> | | | सङ्घदासगणि (भाष्य) | ७५०० |
| ३५. | वृहत्कल्प | ४७३ | मलयगिरि+क्षेमकीर्ति | ४२६०० |
| | | | सङ्घदासगणि (भाष्य) | ७६०० |
| ₹. | व्यवहार | इ७इ | मलयगिरि | ३४००० |
| | | | सङ्घदासगणि (भाष्य) | Égoo |
| ₹७. | दशाश्रुतस्कन्ध | ८९६ | - ? - (चूर्षि) | २२२५ |
| ₹८. | जीतकल्प 🛧 | 930 | सिद्धसेनगणि (चूर्णि) | 9000 |
| ३९. | महानिशीथ . | ४५४८ | - | - |
| Yo. | आवश्यक | 930 | हरिभद्रसूरि | २२००० |
| 89. | ओघनिर्युक्ति | नि.१३५५ | द्रोणाचार्य | (?)ও५०० |
| - | पिण्डनिर्युक्ति 🛨 | नि. ८३५ | मलयगिरिसूरि | ৩০০০ |
| ४२. | दशवैकालिक | ८३५ | हरिभद्रसूरि | 9000 |
| ४३. | उत्तराध्ययन | २००० | शांतिसूरि | १६००० |
| 88. | नन्दी | ७०० | मलयगिरिसूरि | ७७३२ |
| ૪५. | अनुयोगद्वार | २००० | मलधारीहेमचन्द्रसूरि | ५९०० |

નોંધ :-

- (१) ઉક્ત ૪૫ આગમ સૂત્રોમાં વર્તમાન કાળે પહેલાં ૧ થી ૧૧ अंगसूत्रो, १२ થી २३ उपांगसूत्रो, २४थी ३३ प्रकीर्णकसूत्रो ३४थी ३૯ छेदसूत्रो, ४० थी ४३ मूळसूत्रो, ४४-४૫ चृत्तिकासूत्रोना नाभे हाल प्रसिद्ध छे.
- (૨) ઉક્ત શ્લોક સેંખ્યા અમે ઉપલબ્ધ માહિતી અને પૃષ્ઠ સંખ્યા આધારે નોંધેલ છે. જે કે તે સંખ્યા માટે મતાંતર તો જોવા મળે જ છે. જેમકે આચાર સૂત્રમાં ૨૫૦૦, ૨૫૫૪, ૨૫૨૫ એવા ત્રણ શ્લોક પ્રમાણ જાણવા મળેલ છે. આવો મત-ભેદ અન્ય સૂત્રોમાં પણ છે.
- (૩) ઇક્ત वृत्ति-આદિ જે નોંધ છે તે અમે કરેલ સંપાદન મુજબની છે. તે સિવાયની પણ वृत्ति-चूर्णि આદિ સાહિત્ય મુદ્રિત કે અમુદ્રિત અવસ્થામાં હાલ ઉપલબ્ધ છે જ.
- (४) गच्छाचीर અનे मरणसमाधि ना विકલ્પે चंदावेज्झय અને वीरस्तव प्रकीर्णक आवे છે. જે અમે ''आगमसुत्ताणि'' માં મૂળ રૂપે અને ''આગમદીપ''માં અક્ષરશઃ ગુજરાતી અનુવાદ રૂપે આપેલ છે. તેમજ जीतकल्प જેના વિકલ્પ રૂપે છે એ

पंचकल्पनुं भाष्य અभे ''आगमसुत्ताणि''માં સંપાદીત કર્યું છે.

- (૫) ओघ અને पिण्ड એ બંને निर्युक्ति વિકલ્પે છે. જે હાલ मूळसूत्र ३૫ પ્રસિધ્ધ છે. જે બંનેની वृत्ति અમે આપી છે. તેમજ તેમાં भाष्यनी ગાથાઓ પણ સમાવિષ્ટ થઈ છે.
- (୨) ચાર પ્રकीર્णक सूत्रो અને महानिशीय એ પાંચ આગમની કોઈ वृत्ति આદિ ઉપલબ્ધ થવાનો ઉલ્લેખ મળતો નથી. પ્રकीर्णक ની संस्कृत छाया ઉપલબ્ધ છે તેથી મૂકી છે. નિશીય-दशा-जितकल्प એ ત્રણેની चૂર્ષિ આપી છે. જેમાં दशा અને जीतकल्प એ બંને ઉપરवृत्ति મળતી હોવાનો ઉલ્લેખ છે, પણ અમે તે મેળવી શક્યા નથી. જ્યારે નિશીય ઉપર તો માત્ર વીસમા उદ્દેશक:ની જ वृत्ति નો ઉલ્લેખ મળે છે.

🖈 વર્તમાન કાળે ૪૫ આગમમાં ઉપલબ્ધ નિર્યુक्तिः 🐗

| क्रम | निर्युक्ति | श्लोकप्रमाण | क्रम | निर्युक्ति | ° लोकप्रमाण |
|------|------------------------|-------------|------|------------------------|--------------------|
| 9. | आचार-निर्युक्ति | ४५० | ξ. | आवश्यक-निर्युक्ति | २५०० |
| ٦. | सूत्रकृत-निर्युक्ति | २६५ | ૭. | ओधनिर्युक्ति | १३५५ |
| ₹. | बृहत्कल्प-निर्युक्ति 🖈 | - | ۷. | पिण्डनिर्युक्ति | ८३५ |
| ४. | व्यवहार-निर्युक्ति 🖈 | - | ٩. | दशवैकालिक-निर्युक्ति | ५०० |
| ۹. | दशाश्रुत०-निर्युक्ति | 940 | 90. | उत्तराध्ययन-निर्युक्ति | ७०० |

નોંધ :-

- (૧) અહીં આપેલ શ્लोक प्रमाण એ ગાથા સંખ્યા નથી. ''૩૨ અક્ષરનો એક શ્લોક'' એ પ્રમાણથી નોંધાયેલ શ્लोक प्रमाण છે.
- (૨) ★ वृहत्कल्प અને व्यवहार એ બંને સૂત્રોની निर्युक्ति હાલ भाष्य માં ભળી ગઈ છે. જેનો યથાસંભવ ઉલ્લેખ वृत्तिकार महर्षि એ भाष्य ઉપરની वृत्तिમાં કર્યો હોય તેવું જોવા મળેલ છે.
- (૩) ओघ અને पिण्डनिर्युक्ति स्वतंत्र मूलआगम स्વરૂપે સ્થાન પામેલ છે તેથી તેનું स्वतंत्र संपादन आगम-४१ રૂપે થયેલ છે. (તેમજ આ સંપાદનમાં पણ છે.)
- (४) બાકીની છ निर्युक्तिમાંથી दशाश्रुतस्कन्ध निर्युक्ति ઉપર चूर्णि અને અન્ય પાંચ निर्युक्ति ઉપરની वृत्ति અમે અમારા સંપાદનમાં પ્રકાશીત કરી છે. જ્યાં આ છ निर्युक्ति સ્પષ્ટ અલગ જોઈ શકાય છે.
- (૫) નિર્યુक્તિકર્તા તરીકે भद्रवाहुस्वामी નો ઉલ્લેખ જ જોવા મળે છે.

વર્તમાન કાળે ૪૫ આગમમાં ઉપલબ્ધ માથ્યં

| क्रम | भाष्य | श्लोकप्रमाण | क्रम | भाष्य | गाथाप्रमाण |
|------|----------------|-------------|------|------------------------|------------|
| 9. | निशीषभाष्य | ७५०० | ξ. | आवश्यकभाष्य * | ४८३ |
| ٦. | बृहत्कल्पभाष्य | ७६०० | છ. | ओघनिर्युक्तिभाष्य 🖈 | ३२२ |
| ₹. | व्यवहारभाष्य | ६४०० | ۷. | पिण्डनिर्युक्तिभाष्य 🖈 | ४६ |
| ٧. | पञ्चकल्पभाष्य | ३१८५ | ٩. | दशवैकालिकभाष्य 🛧 | ६३ |
| ч. | जीतकल्पभाष्य | ३१२५ | 90. | उत्तराध्ययनभाष्य (?) | _ |

નોંધ :-

- (૧) निशीष, वृहत्कल्प અને व्यवहारभाष्य ना કર્તા सङ्घदासगणि હોવાનું જણાય છે. અમારા સંપાદનમાં निशीष भाष्य तेनी चूर्णि साथे અને बृहत्कल्प तथा व्यवहार भाष्य तेनी-तेनी वृत्ति साथे सभाविष्ट थयुं છे.
- (२) पञ्चकल्पभाष्य અभारा आगमसुत्ताणि भाग-३८ भां प्रकाशीत थयुं.
- (3) आवश्यकभाष्य માં ગાથા પ્રમાણ ૪૮૩ લખ્યું જેમાં ૧૮૩ ગાથા મૂळभाष्य રૂપે છે અને ૩૦૦ ગાથા અન્ય એક भाष्यની છે. જેનો સમાવેશ आवश्यक सूत्रं-सटीकं માં કર્યો છે. [જો કે विशेषावश्यक भाष्य ખૂબજ પ્રસિધ્ધ થયું છે પણ તે સમગ્ર आवश्यकसूत्र- ઉપરનું भाष्य નથી અને अध्ययनो અનુસારની અલગ અલગ वृत्ति આદિ પેટા વિવરણો તો आवश्यक અને जीतकल्प એ બંને ઉપર મળે છે. જેનો અત્રે ઉલ્લેખ અમે કરેલ નથી.]
- (४) ओघनिर्युक्ति, पिण्डनिर्युक्ति, दशवैकालिकभाष्य नो सभावेश तेनी तेनी वृत्ति भां થયો જ છે. પણ તેનો કર્તા વિશેનો ઉલ્લેખ અમોને મળેલ નથી. [ओघनिर्युक्ति ઉપર 3000 શ્લોક પ્રમાણ भाष्यनो ઉલ્લેખ પણ જોવા મળેલ છે.]
- (૫) उत्तराध्ययनभाष्यनी ગાધા निर्युक्तिમાં ભળી ગયાનું સંભળાય છે (?)
- (ક) આ રીતે અંગ उपांग प्रकीर्णक चूलिका એ ३५ आगम सूत्रो ઉપરનો કોઈ भाष्यનો ઉલ્લેખ અમારી જાણમાં આવેલ નથી. કોઈક સ્થાને સાક્ષી પાઠ-આદિ સ્વરૂપે भाष्यगाथा જોવા મળે છે.
- (૭) भाष्यकर्ता तरीडे મુખ્ય નામ सङ्घदासगणि % તેવા મળેલ છે. તેમજ जिनभद्रगणि-क्षमाश्रमण અને सिद्धसेन गणि नो पश ઉલ્લેખ મળે છે. કેટલાંક भाष्यना કર્તा અજ્ઞાત જ છે.

વિર્તમાન કાળે ૪૫ આગમમાં ઉપલબ્ધ चૂર્णિઃ)

| | | | | -01 | 0-2 |
|------|----------------------------|-------------|------|----------------------|-------------|
| क्रम | चूर्णि | श्लोकप्रमाण | क्रम | चूर्णि | श्लोकप्रमाण |
| 9. | आचार-चूर्णि | رغوه | ۶. | दशाश्रुतस्कन्धचूर्णि | २२२५ |
| ٦. | सूत्रकृत-चूर्णि | ९९०० | 90. | पञ्चकल्पचूर्णि | ३२७५ |
| ₹. | भगवती-चूर्णि | 3998 | 99. | जीतकल्पचूर्णि | 9000 |
| ጸ. | जीवाभिगम-चूर्णि | 9400 | 92. | आवश्यकचूर्णि | 9८५०० |
| 4. | जंबूद्दीपप्रज्ञप्ति-चूर्णि | १८७९ | 93. | दशवैकालिकचूर्णि | ७००० |
| ξ. | निशीथचूर्णि | २८००० | 98. | उत्तराध्ययनचूर्णि | ५८५० |
| ৩. | वृहत्कल्पचूर्णि | 98000 | 9 ५. | नन्दीचूर्णि | 9400 |
| ۷. | व्यवहारचूर्णि | 9200 | 9Ę. | अनुयोगदारचूर्णि | २२६५ |

નોંધ ઃ-

- (૧) ઉક્ત ૧*૬* चૂર્णિમાંથી નિશીય , दशाश्रुतस्कन्ध, जीतकल्प એ ત્રણ चूर्णિ અમારા આ સંપાદનમાં સમાવાઈ ગયેલ છે.
- (૨) आचार, सूत्रकृत, आवश्यक, दशवैकालिक, उत्तराध्ययन, नन्दी, अनुयोगद्वार એ સાત चूर्ण પુજ્યપાદ આગમોદ્ધારક શ્રી એ પ્રકાશીત કરાવી છે.
- (૩) दशवैकालिकनी બીજી એક चूर्णि જે अगत्त्यसिंहसूरिकृत છે તેનું પ્રકાશન પૂજ્ય શ્રી પુન્યવિજયજીએ કરાવેલ છે.
- (४) जंबूद्वीपप्रज्ञप्तिचूर्णि विशे હીરાલાલ કાપડીયા પ્રશ્નાર્થચિક ઉભું કરે છે. भगवती चूर्णि तो भणेश्व છे, पण्ड ७७ प्रકाशीत થઈ नथी. तेभश्व वृहत्कल्प, व्यवहार, पञ्चकल्प એ त्रण्ड ७२तप्रतो અમे श्रेष्ठ छे पण्ड प्रकाशीत थयानुं श्राण्डमां नथी.
- (૫) चूर्णिकार तरीके जिनदासगणिमहत्तरन्। नाम मुખ्यत्वे संભળાય છે. કેટલાકના મતે અમુક चूर्णिना કર્તાનો સ્પષ્ટોલ્લેખ મળતો નથી.

"આગમ-પંચાંગી" એક ચિન્ત્ય બાબત"

- ૧ વર્તમાન કાળે પ્રાપ્ત આગમ સાહિત્યની વિચારણા પછી ખરેખર આગમના પાંચ અંગોમાં કેટલું અને શું ઉપલબ્ધ છે તે જાણ્યા પછી એક પ્રશ્ન થાય કે આગમ પંચાંગી ની વાતો કેટલી ચિન્ત્ય છે. અંગ-उपांग-प्रकीर्णक-चूलिका એ ૩૫ આગમો ઉપર पाष्य નથી. એટલે ૩૫ આગમનું એક અંગ તો અપ્રાપ્ય જ બન્યું. સૂત્ર પરત્વે ઉપલબ્ધ નિર્યુक्तિ ફક્ત છ છે. એટલે ૩૯ આગમોનું એક અંગ અપ્રાપ્ય જ બન્યું. આ રીતે ક્યાંક भाष्य, ક્યાંક નિર્યુक્તિ અને ક્યાંક चૂર્णિના અભાવે વર્તમાન કાળે સુવ્યવસ્થિત पंचांगी એક માત્ર आवश्यक सूत्रની ગણાય.
- ૨ નંદીસૂત્ર માં પંચાંગીને બદલે સંग્રहणી, પ્રતિપત્તિ ઓ વગેરેના પણ ઉલ્લેખ છે.

Þ ૪૫ આગમ અંતર્ગત વર્તમાન કાળે ઉપલબ્ધ વિભાગો 🐗

સૂચના :- અમે સંપાદીત કરેલ आगमसुत्ताणि-सटीकं માં બેકી નંબરના પૃષ્ઠી ઉપર જમણી બાજુ आगमसूत्र ના નામ પછી અંકો આપેલ છે. જેમકે ૧/૩/૬/૨/૫૪ વગેરે. આ અંકો તે તે આગમના વિભાગીકરણને જણાવે છે. જેમકે आचारમાં પ્રથમ અંક શુત્તस्कन्धનો છે તેના વિભાગ રૂપે બીજો અંક चूला છે તેના પેટા વિભાગ રૂપે ત્રીજો અંક अध्ययन નો છે. તેના પેટા વિભાગ રૂપે ચોથો અંક उद्देशक નો છે. તેના પેટા વિભાગ રૂપે છેલ્લો અંક મૂलનો છે. આ मूल ગદ્ય કે પદ્ય હોઈ શકે. જો ગદ્ય હોય તો ત્યાં પેરેબ્રાફ સ્ટાઈલથી કે છુટુ લખાણ છે અને गाथा/પદ્ય ને પદ્યની સ્ટાઈલથી ॥ – ॥ ગોઠવેલ છે.

ં પ્રત્યેક આગમ માટે આ રીતે જ ઓલ્લિકમાં (/) પછી ના વિભાગને તેના-તેના પેટા-પેટા વિભાગ સમજવા.

જ્યાં જે-તે પેટા વિભાગ ન હોય ત્યાં (/-) ઓબ્લિક પછી ડેસ મુકીને તે વિભાગ ત્યાં નથી તેમ સુચવેલું છે.]

- (१) आचार श्रुतस्कन्धः/चूला/अध्ययनं/उद्देशकः/मूलं चूला नामक पेटा विभाग जीका श्रुतस्कन्धः मां क्ष छे.
- (२) सूत्रकृत श्रुतस्कन्धः/अध्ययनं/उद्देशकः/मूलं
- (३) स्थान स्थानं/अध्ययनं/मूलं
- (४) समवाय समवायः/मूलं
- (५) भगवती शतकं/वर्गाः-अंतरशतकं/उद्देशकः/मूलं अर्धी शतकना पेटा विल्यागमां ले नामो छे. (१) वर्गः (२) अंतर्शतक डेमडे शतक २१, २२, २७ मां शतक ना पेटा विल्यागनुं नाम वर्गः ४ स्रावेश छे. शतक ३३,३४,३५,३६,४० ना पेटा विल्यागने अंतरशतक अथवा शतकशतक नामथी ओणभावाय छे.
- (६) ज्ञाताधर्मकथा- श्रुतस्कन्धः/यर्गः/अध्ययनं/मूलं પહેલા श्रुतस्कन्ध માં अध्ययन જ છે. બીજા श्रुतस्कन्ध नो પેટાવિભાગ वर्गा नामे છે અને ते वर्गा ना પેટા વિભાગમાં अध्ययन છે.
- (७) उपासकदशा- अध्ययनं/मूलं
- (८) अन्तकृदशा- वर्गः/अध्ययनं/मूलं
- (९) अनुत्तरोपपातिकदशा- वर्गः/अध्ययनं/मूलं
- (१०) प्रश्नव्याकरण- द्वारं/अध्ययनं/मूलं आश्रव અને संवर એવા સ્પષ્ટ બે ભેદ છે જેને आश्रवद्वार અને संवरद्वार કહ્યા છે. (કોઈક द्वार ने બદલે शुतस्कन्य શબ્દ પ્રયોગ પણ કરે છે)
- (१९) विपाकश्रुत- श्रुतस्कन्धः/अध्ययनं/मूलं
- (१२) औपपातिक- मूलं
- (१३) राजप्रश्नीय- मूलं

(१४) जीवाजीवाभिगम- *प्रतिपत्तिः/* उद्देशकः/मूलं

આ આગમમાં ઉક્ત ત્રણ વિભાગો કર્યા છે તો પણ સમજશ માટે प्रतिपत्तिः પછી એક પેટાવિભાગ -ોંધનીય છે. કેમકે प्रतिपत्ति -३-માં नैरइय, तिरिक्खजोणिय, मनुष्य, देव એવા ચાર પેટાવિભાગો પડે છે. તેથી तिपत्ति(नेरइयजादि)/उद्देशकः/मूलं એ રીતે સ્પષ્ટ અલગ પાડેલા છે, એજ રીતે દશમી प्रतिपत्ति ना उद्देशकः नव नथी पक्ष ते પેટાવિભાગ प्रतिपत्तिः नामे જ છે.

- (१५) प्रज्ञापना- पदं/उद्देशकः/द्वारं/मूलं पदना પેટા વિભાગમાં ક્યાંક उद्देशकः છે, ક્યાંક દ્વારં છે પણ પद-૨૮ના પેટા વિભાગમાં उर्देशकः અને તેના પેટા વિભાગમાં द्वारं પણ છે.
- (१६) सूर्यप्रक्ति- प्राभृतं/प्राभृतप्राभृतं/मूलं
- (१७) चन्द्रप्रक्ति- प्राभृतं/प्राभृतप्राभृतं/मूलं આગમ ૧,5-૧૭માં प्रामृतप्रामृत ના પણ प्रतिपत्तिः નામક પેટા વિભાગ છે. પણ उद्देशकः આદિ મુજબ તેનો વિશેષ વિસ્તાર થાયેલ નથી.
- (१८) जम्बूदीपप्रक्तिः वक्षस्कारः/मूलं
- (१९) निरयावलिका अध्ययनं/मूलं
- (२०) कल्पवतंसिका अध्ययनं/मूलं
- (२**९) पुष्पिता -** अध्ययनं/मूलं
- (२२) पुष्पच्लिका अध्ययनं/मूलं
- (२३) विण्हिदशा अध्ययनं/मूलं આગમ ૧૯ થી ૨૩ निरवाविलकादि नाभથી સાથે જોવા મળે છે કેમકે તેને ઉપાંગના પાંચ વર્ગ તરીકે સુત્રકારે ઓળખાવેલા છે. જેમાં વર્ગ-૧, निरवाविलका, વર્ગ-२ कल्पवतंतिका... વગેરે જાણવા
- (२४ थी ३३) चतुःशरण (आदि दशेपयत्रा) मूलं
- (३४) निशीय उद्देशकः/मूलं
- (३५) बृहत्कल्प उद्देशकः/मूलं
- (३६) व्यवहार उद्देशकः/मूलं
- (३७) दशाश्रुतस्कन्ध दशा/मूलं
- (३८) जीतकल्प मूलं
- (३९) महानिशीय अध्ययनं/उद्देशकः/मूलं
- (४०) **आवश्यक** अध्ययनं/मूलं
- (४१) ओघ/पिण्डनियुक्ति मूलं
- (४२) दशवैकालिक अध्ययनं/उद्देशकः/मूलं
- (४३) उत्तराध्ययन अध्ययनं//मूलं
- (४४- ४५) नन्दी-अनुयोगद्वार मूलं

[9]

અમારા સંપાદીત ૪૫ આગમોમાં આવતા મૂલ નો અંક તથા તેમાં સમાવિષ્ટ ગાથા

| क्रम | आगमसूत्र | मूलं | गाथा | क्रम | आगमसूत्र | मूलं | गाथा |
|-------------|--------------------|------------|------|-------------|----------------------|------------|------|
| 9. | आचार | ५५२ | १४७ | २४. | चतुःशरण | ६३ | ६३ |
| ٠ | सूत्रकृत | ८०६ | ७२३ | ર ષ. | आतुरप्रत्याख्यान | ড 9 | ७० |
| ₹. | स्थान | 9090 | १६९ | २६. | महाप्रत्याख्यानं | १४२ | १४२ |
| ٧,٠ | समवाय | 3 ८ ३ | ९३ | २७. | भक्तपरिज्ञा | १७२ | १७२ |
| ۷. | भगवती | १०८७ | 398 | २८. | तंदुलवैचारिक | 959 | 938 |
| Ę . | ज्ञाताधर्मकथा | २४१ | 40 | २९. | संस्तारक | 933 | 933 |
| છ. | उपासक दशा | ৩३ | 93 | ₹0. | गच्छाचार | 930 | १३७ |
| ۵. | अन्तकृद्दशा | ६२ | 97 | ₹9. | गणिविद्या | ८२ | ८२ |
| የ. | अनुत्तरोपपातिक | 93 | ጸ | ₹₹. | देवेन्द्रस्तव | ४०७ | १०७ |
| 90. | प्रश्नव्याकरण | ४७ | 98 | ₹₹. | मरणसमाधि | ६६४ | ६६४ |
| 99. | विपाकश्रुत | ४७ | Ę | ₹¥. | निशीष | १४२० | _ |
| 97. | औपपातिक | ৩৩ | ३० | ३ ५. | बृहत्कल्प | २१५ | - |
| 93. | राजप्रश्निय | ८ ५ | - | ₹. | व्यवहार | २८५ | - |
| 98. | जीवाभिगम | ३९८ | ९३ | રૂછ. | दशाश्रुतस्कन्ध | 998 | ५६ |
| 94. | प्रज्ञापना | ६२२ | २३१ | ३८. | जीतकल्प | 903 | 903 |
| 9٤. | सूर्यप्रज्ञप्ति | २१४ | १०३ | ३९. | महानिशीथ | १५२८ | اع |
| 90, | चन्द्रप्रज्ञप्ति | २१८ | 900 | ٧٥. | आवश्यक | ९२ | २९ |
| 94. | जम्बूदीपप्रज्ञप्ति | ३६५ | 939 | ٧٩. | ओघनिर्युक्ति | ११६५ | 99६५ |
| 9 ९. | निरयावलिका | 29 | _ | ४ 9. | पिण्डनिर्युक्ति | ७१२ | ७१२ |
| २०. | कल्पवतंसिका | વ | 9 | ४२. | दशवैकालिक | ५४० | 494 |
| ₹9. | पुष्पिता | 99 | 2 | ٧٤. | उत्तराध्य य न | <u> </u> | १६४० |
| २२. | पुष्पचूलिका | 3 | 9 | 88. | नन्दी | 9 ६ ८ | ९३ |
| २३. | वण्हिदशा | 4 | 9 | ४५. | अनुयोगद्वार | ३५० | 989 |

નોંધ :- ઉક્ત गाद्या સંખ્યાનો સમાવેશ મૂત્તં માં થઈ જ જાય છે. તે મૂત્ત સિવાયની અલગ ગાથા સમજવી નહીં. મૂત્ત શબ્દ એ અમો સૂત્ર અને ગાથા બંને માટે નો આપેલો સંયુક્ત અનુક્રમ છે. गાથા બધાંજ સંપાદનોમાં સામાન્ય અંક ધરાવતી હોવાથી તેનો અલગ અંક આપેલ છે. પણ સૂત્રના વિભાગ દરેક સંપાદકે ભિન્નભિન્ન રીતે કર્યા હોવાથી અમે સૂત્રાંક જુદો પાડતા નથી.

🗕 અમારા પ્રકાશનો :–

- [१] अभिनव हेम लघुप्रक्रिया १ सप्ताङ्ग विवरणम् [२] अभिनव हेम लघुप्रक्रिया - २ - सप्ताङ्ग विवरणम्
- [3] अभिनव हेम लघुप्रक्रिया ३ सप्ताङ्ग विवरणम्
- [४] अभिनव हेम लघुप्रक्रिया ४ सप्ताङ्ग विवरणम्
- [५] वृद्धन्तमाला
- [5] चैत्यवन्दन पर्वमाला
- [७] चैत्यवन्दन सङ्ग्रह तीर्थजिनविशेष
- [८] चैत्यवन्दन चोविशी
- [८] शत्रुञ्जय भक्ति [आवृत्ति-दो]
- [१0] अभिनव जैन पञ्चाङ्ग २०४६
- [૧૧] અભિનવ ઉપદેશ પ્રાસાદ ૧- શ્રાવક કર્તવ્ય ૧ થી ૧૧
- [૧૨] અભિનવ ઉપદેશ પ્રાસાદ ૨- શ્રાવક કર્તવ્ય ૧૨ થી ૧૫
- [૧૩] અભિનવ ઉપદેશ પ્રાસાદ ૩- શ્રાવક કર્તવ્ય ૧.૬ થી ૩.૬
- ં [૧૪] 👤 નવપદ શ્રીપાલ (શાશ્વતી ઓળીના વ્યાખ્યાન રૂપે)
 - [૧૫] સમાધિ મરણ [વિધિ સૂત્ર પદ્મ આરાધના-મરણભેદ-સંગ્રહ]
 - [૧૬] ચૈત્યવંદન માળા [૭૭૯ ચૈત્યવનંદનોનો સંગ્રહ]
 - [૧૭] તત્વાર્થ સૂત્ર પ્રબોધટીકા અધ્યાય-૧]
 - [૧૮] તત્વાર્થ સૂત્રના આગમ આધાર સ્થાનો
 - [૧૯] સિદ્ધાચલનો સાથી [આવૃત્તિ બે]
 - [૨૦] ચૈત્ય પરિપાટી
 - [૨૧] અમદાવાદ જિનમંદિર ઉપાશ્રય આદિ ડિરેક્ટરી
 - [૨૨] શત્રુંજય ભક્તિ [આવૃત્તિ બે]
 - [૨૩] શ્રી નવકારમંત્ર નવલાખ જાપ નોંધપોથી
 - [૨૪] શ્રી ચારિત્ર પદ એક કરોડ જાપ નોંધપોથી
 - [૨૫] શ્રી બારવ્રત પુસ્તિકા તથા અન્ય નિયમો [આવૃત્તિ ચાર]
 - [૨૬] અભિનવ જૈન પંચાંગ ૨૦૪૨ [સર્વપ્રથમ ૧૩ વિભાગોમાં]
 - [૨૭] શ્રી જ્ઞાનપદ પૂજા
 - [૨૮] અંતિમ આરાધના તથા સાધુ સાધ્વી કાળધર્મ વિધિ
 - [૨૯] શ્રાવક અંતિમ આરાધના [આવૃત્તિ ત્રણ]
 - [30] વીતરાગ સ્તુતિ સંચય [૧૧૫૧ ભાવવાહી સ્તુતિઓ]
 - [૩૧] (પૂજ્ય આગમોદ્વારક શ્રી ના સમુદાયના) કાયમી સંપર્ક સ્થળો
 - [૩૨] તત્વાર્થાધિગમ સૂત્ર અભિનવ ટીકા અધ્યાય–૧
 - [૩૩] તત્વાર્થાધિગમ સૂત્ર અભિનવ ટીકા અધ્યાય-૨
 - [૩૪] તત્વાર્થાધિગમ સૂત્ર અભિનવ ટીકા અધ્યાય-૩
 - [૩૫] તત્વાર્થાધિગમ સૂત્ર અભિનવ ટીકા અધ્યાય-૪

[35] તત્વાર્થાધિગમ સૂત્ર અભિનવ ટીકા – અધ્યાય-૫ [30] તત્વાર્થાધિગમ સૂત્ર અભિનવ ટીકા – અધ્યાય-5 [3૮] તત્વાર્થાધિગમ સૂત્ર અભિનવ ટીકા – અધ્યાય-૭ [3૯] તત્વાર્થાધિગમ સૂત્ર અભિનવ ટીકા – અધ્યાય-૮ [૪૦] તત્વાર્થાધિગમ સૂત્ર અભિનવ ટીકા – અધ્યાય-૯ [૪૧] તત્વાર્થાધિગમ સૂત્ર અભિનવ ટીકા – અધ્યાય-૧૦

પ્રકાશન ૧ થી ૪૧ અભિનવશ્રુત પ્રકાશને પ્રગટ કરેલ છે.

| | | | |
|---------------|------------------|-------------------|---------------------------|
| [४२] | आयारो | [आगमसुत्ताणि-१] | पढमं अंगसुत्तं |
| [४३] | सूयगडो | [आगमसुत्ताणि-२] | वीअं अंगसुत्तं |
| [88] | ठाणं | [आगमसुत्ताणि-३] | तइयं अंगसुत्तं |
| [४५] | समवाओ | [आगमसुत्ताणि-४] | चउत्यं अंगसुत्तं |
| [४६] | विवाहपन्नति | [आगमसुत्ताणि-५] | पंचमं अंगसुत्तं |
| [૪૭] | नायाधम्मकहाओ | [आगमसुत्ताणि-६] | छड्डं अंगसुत्तं |
| [४८] | उवासगदसाओ | [आगमसुत्ताणि-७] | सत्तमं अंगसुत्तं |
| [88] | अंतगडदसाओ | [आगमसुत्ताणि-८] | अहुमं अंगसुत्तं |
| [५ ၀] | अनुत्तोयवाइयदसाओ | [आगमसुत्ताणि-९] | नवमं अंगसुत्तं |
| [५१] | पण्हावागरणं | [आगमसुत्ताणि-१०] | दसमं अंगसुत्तं |
| [५२] | विवागसूयं | [आगमसुत्ताणि-११] | एक्षरसमं अंगसुत्तं |
| [५३] | उववाइयं | [आगमसुत्ताणि-१२] | पढमं उदंगसुत्तं |
| [५४] | रायप्पसेणियं | [आगमसुत्ताणि-१३] | वीअं उवंगसु तं |
| [५५] | जीवाजीवाभियमं | [आगमसुत्ताणि-१४] | तइयं उचंगस ुतं |
| [५६] | पन्नवणासुत्तं | [आगमसुत्ताणि-१५] | चउत्यं उवंगसुत्तं |
| [५७] | सूरपन्नतिः | [आगमसुत्ताणि-१६] | पंचमं उवंगसुत्तं |
| [५८] | चंदपत्रतिः | [आगमसुत्ताणि-१७] | छट्टं उवंगसुत्तं |
| [५९] | जंबूदीयपन्नति | [आगमसुत्ताणि-१८] | सत्तमं उवंगसुत्तं |
| [ξο] | निरयावलियाणं | [आगमसुत्ताणि-१९] | अडुमं उवंगसुत्तं |
| [६१] | कप्पवडिंसियाणं | [आगमसुताणि-२०] | नवमं उवंगसुत्तं |
| [६२] | पुष्फियाणं | [आगमसुत्ताणि-२१] | दसमं उवंगस ुतं |
| [ξ ξ] | पुष्फचूलियाणं | [आगमसुत्ताणि-२२] | एकारसमं उवंगसुत्तं |
| [ξ ૪] | वण्हिदसाणं | [आगमसुत्ताणि-२३] | बारसमं उवंगसुत्तं |
| [६५] | चउसरणं | [आगमसुत्ताणि-२४] | पढमं पईण्णगं |
| [ξξ] | आउरपद्यक्खाणं | [आगमसुत्ताणि-२५] | बीअं पईण्णगं |
| [६७] | महापद्मक्खाणं | [आगमसुत्ताणि-२६] | तीइयं पईण्णगं |
| [६८] | भत्तपरिण्णा | [आगमसुत्ताणि-२७] | चउत्यं पईण्णगं |
| | | - - | |

| [६९] | तंदुलवेयालियं | [आगमसुत्ताणि-२८] | पंचमं पईण्णगं |
|---------------|------------------|---------------------|------------------------|
| [00] | सं धा रगं | - | |
| | | [आगमसुत्ताणि-२९] | छठ्ठं पईण्णगं |
| [69] | गच्छायार | [आगमसुत्ताणि-३०/१] | सत्तमं पईण्णगं-१ |
| [७२] | चंदावेज्झयं | [आयमसुत्ताणि-३०/२] | सत्तमं पईण्णगं-२ |
| [ছ ខ] | गणिविञ्जा | [आगमसुत्ताणि-३१] | अडुमं पईण्णगं |
| [૪૪] | देविंदत्यओ | [आगमसुत्ताणि-३२] | नवमं पईण्णगं |
| [૭૫] | मरणसमाहि | [आगमसुत्ताणि-३३/१] | दसमं पईण्णगं-१ |
| [७६] | वीरत्यव | [आगमसुत्ताणि-३३/२] | दसमं पईण्णगं-२ |
| [७७] | निसीह | [आगमसुत्ताणि-३४] | पढमं छेयसुत्तं |
| [७८] | बुहत्कप्पो | [आगमसुत्ताणि-३५] | बीअं छेयसुत्तं |
| [৩९] | ववहार | [आगमसुत्ताणि-३६] | तइयं छेयसुत्तं |
| [८०] | दसासुयक्खंधं | [आगमसुत्ताणि-३७] | चउत्यं छेयसुत्तं |
| [८१] | जीयकप्पो | [आगमसुत्ताणि-३८/१] | पंचमं छेयसुत्तं-१ |
| [૮૨] | पंचकप्पभास | [आगमसुत्ताणि-३८/२] | पंचमं छेयसुत्तं-२ |
| [٤٤] | महानिसीहं | [आगमसुत्ताणि-३९] | छड्ठं छेयसुत्तं |
| [८४] | आवसस्सयं | [आगमसुत्ताणि-४०] | प ढमं मूलसुत्तं |
| [८५] | ओहनिञ्जृत्ति | [आगमसुत्ताणि-४१/१] | बीअं मूलसुत्तं-१ |
| [८६] | पिंडनिञ्जुत्ति | [आगमसुत्ताणि-४१/२] | बीअं मूलसुत्तं-२ |
| [১৩] | दसवेयालियं | [आगमसुत्ताणि-४२] | तइयं मुलसुत्तं |
| [८८] | उतरज्झयणं | [आगमसुत्ताणि-४३] | चउत्थं मूलसुत्तं |
| [۷۶] | नंदीसूयं | [आगमसुत्ताणि-४४] | पढमा चूलिया |
| [66] | अनुओगदारं | [आगमसुत्ताणि-४५] | बितिया चूलिया |
| | | | |

પ્રકાશન ૪૨ થી ૯૦ આગમશુત પ્રકાશને પ્રગટ કરેલ છે.

| આયાર - | ગુજરાતી અનુવાદ | [આગમદોપ-૧] | પહેલું અંગસૂત્ર |
|--------------------|---|--|---|
| સૂયગડ - | ગુજરાતી અનુવાદ | [આગમદીપ-૧] | બીજું અંગસૂત્ર |
| ઠાણ - | ગુજરાતી અનુવાદ | [આગમદીપ-૧] | ત્રીજું અંગસૂત્ર |
| સમવાય - | ગુજરાતી અનુવાદ | [આગમદીપ-૧] | ચોથું અંગસૂત્ર |
| વિવાહપત્રત્તિ - | ગુજરાતી અનુવાદ | [આગમદીપ-૨] | પાંચમું અંગસૂત્ર |
| નાયાધમ્મકહા - | ગુજરાતી અનુવાદ | [આગમદીપ-૩] | છઠ્ઠ અંગસૂત્ર |
| ઉવાસગદસા – | ગુજરાતી અનુવાદ | [આગમદીપ-૩] | સાતમું અંગસૂત્ર |
| અંતગડદસા - | ગુજરાતી અનુવાદ | [આગમદીપ-૩] | આઠમું અંગસૂત્ર |
| અનુત્તરોપપાતિકદસા- | ગુજરાતી અનુવાદ | [આગમદીપ-૩] | નવમું અંગસૂત્ર |
| પશ્હાવાગરશ- | ગુજરાતી અનુવાદ | [આગમદીપ-૩] | દશમું અંગસૂત્ર |
| | સૂયગડ - ઠાણ - સમવાય - વિવાહપત્રત્તિ - નાયાધમ્મકહા - ઉવાસગદસા - અંતગડદસા - અનુત્તરોપપાતિકદસા- | સૂયગડ - ગુજરાતી અનુવાદ ઠાક્ષ - ગુજરાતી અનુવાદ સમવાય - ગુજરાતી અનુવાદ વિવાહપત્રત્તિ - ગુજરાતી અનુવાદ નાયાધમ્મકહા - ગુજરાતી અનુવાદ ઉવાસગદસા - ગુજરાતી અનુવાદ અંતગડદસા - ગુજરાતી અનુવાદ | સૂયગડ - ગુજરાતી અનુવાદ (આગમદીપ-૧) ઠાષ્મ - ગુજરાતી અનુવાદ (આગમદીપ-૧) સમવાય - ગુજરાતી અનુવાદ (આગમદીપ-૧) વિવાહપત્રત્તિ - ગુજરાતી અનુવાદ (આગમદીપ-૨) નાયાધમ્મકહા - ગુજરાતી અનુવાદ (આગમદીપ-૩) ઉવાસગદસા - ગુજરાતી અનુવાદ (આગમદીપ-૩) અંતગડદસા - ગુજરાતી અનુવાદ (આગમદીપ-૩) અનુત્તરોપપાતિકદસા- ગુજરાતી અનુવાદ (આગમદીપ-૩) |

| | | [10] | |
|----------------|--------------------------|-----------------------------|---------------------|
| [909] | વિવાગસૂય - | ગુજરાતી અનુવાદ | [આગમદીપ-૩] |
| [૧૦૨] | ઉવવાઇય | ગુજરાતી અનુવાદ | [આગમદીપ-૪] |
| [9O3] | રાયપ્પસેશ્રિય - | ગુજરાતી અનુવાદ | [આગમદીપ-૪] |
| [80¥] | જીવાજીવાભિગમ - | ગુજરાતી અનુવાદ | [આગમદીપ-૪] |
| [૧૦૫] | પત્રવજ્ઞાસુત્ત | ગુજરાતી અનુવાદ | [આગમદીપ-૪] |
| [205] | सूरपन्नत्ति - | ગુજરાતી અનુવાદ | [આગમદીપ-૫] |
| [૧૦૭] | ચંદપત્રતિ - | ગુજરાતી અનુવાદ | [આગમદીપ-૫] |
| [90८] | જંબુદીવપત્રતિ - | ગુજરાતી અનુવાદ | [આગમદીપ-૫] |
| [906] | નિરયાવલિયા - | ગુજરાતી અનુવાદ _્ | [આગમદીપ-૫] |
| [૧૧૦] | કપ્પવર્ડિસિયા – | ગુજરાતી અનુવાદ | [આગમદીપ-૫] |
| [૧૧૧] | પુપ્કિયા - | ગુજરાતી અનુવાદ | [આગમદીય-૫] |
| [૧૧૨] | પુપ્કચૂલિયા - | ગુજરાતી અનુવાદ | [આગમદીપ-પ] |
| [૧૧૩] | વર્ષ્ટિકસા - | ગુજરાતી અનુવાદ | [આગમદીપ-પ] |
| [૧૧૪] | ચઉસરણ - | ગુજરાતી અનુવાદ | [આગમદીપ-૬] |
| [૧૧૫] | આઉરપ્પચ્ચકખાણ - | ગુજરાતી અનુવાદ | [આગમદીપ-૬] |
| [99 <i>5</i>] | મહાપચ્ચક્ખાણ - | ગુજરાતી અનુવાદ | [આગમદીપ-૬] |
| [૧૧૭] | ભત્તપરિજ્ઞા - | ગુજરાતી અનુવાદ | [આગમદીપ-૬] |
| [११८] | તંદુલવેયાલિય - | ગુજરાતી અનુવાદ | [આગમદીપ-ક] |
| [૧૧૯] | સંથારગ - | ગુજરાતી અનુવાદ | [આગમદીપ-૬] |
| [૧૨૦] | ગચ્છાયાર - | ગુજરાતી અનુવાદ | [આગમદીપ-ક] |
| [૧૨૧] | ચંદાવેજઝય - | ગુજરાતી અનુવાદ | [આગમદીપ-ક] |
| [૧૨૨] | ગણિવિજ્ઞ - | ગુજરાતી અનુવાદ | [આગમદીપ- <i>ક</i>] |
| [૧૨૩] | દેવિંદત્યઓ - | ગુજરાતી અનુવાદ | [આગમદીપ-૬] |
| [૧૨૪] | વીરત્થવ - | ગુજરાતી અનુવાદ | [આગમદીપ-૬] |
| [૧૨૫] | નિસીહ - | ગુજરાતી અનુવાદ | [આગમદીપ-૬] |
| [૧૨૬] | બુહતકપ્પ – | ગુજરાતી અનુવાદ | [આગમદીપ-૬] |
| [૧૨૭] | વવહાર - | ગુજરાતી અનુવાદ | [આગમદીપ-૬] |
| [૧૨૮] | દસાસુયક્ખંધ - | ગુજરાતી અનુવાદ | [આગમદીપ- <i>૬</i>] |
| [૧૨૯] | જીયકપ્પો - | ગુજરાતી અનુવાદ | [આગમદીપ-૬] |
| [૧૩૦] | મહાનિસીહ - | ગુજરાતી અનુવાદ | [આગમદીપ-૬] |
| [939] | આવસ્સય - | ગુજરાતી અનુવાદ | [આગમદીપ-૭] |
| [૧૩૨] | _ | ગુજરાતી અનુવાદ | [આગમદીપ-૭] |
| [৭૩૩] | પિંડનિ જજુ ત્તિ - | ગુજરાતી અનુવાદ | [આગમદીપ-૭] |
| [૧૩૪] | દસવેયાલિય - | ગુજરાતી અનુવાદ | [આગમદીપ-૭] |
| | | | |

અગિયારમું અંગસૂત્ર પહેલું ઉપાંગસૂત્ર બીજું ઉપાંગસૂત્ર ત્રીજું ઉપાંગસૂત્ર ચોથું ઉપાંગસૂત્ર પાચમું ઉપાંગસૂત્ર છક્ષં ઉપાંગસૂત્ર સાતમું ઉપાંગસૂત્ર આઠમું ઉપાંગસૂત્ર નવમું ઉપાંગસૂત્ર દશમું ઉપાંગસૂત્ર અગિયારમું ઉપાંગસૂત્ર બારમું ઉપાંગસૂત્ર પહેલો પયત્રો બીજો પયત્રો ત્રીજો પયજાો ચોથો પયત્રો પાંચમો પયત્રો છક્રો પયત્રો સાતમો પયક્ષો-૧ સાતમો પયત્રો-૨ આઠમો પયજ્ઞો નવમો પયશ્રો દશમો પયન્નો પહેલું છેદસૂત્ર બીજું છેદસૂત્ર ત્રીજું છેદસૂત્ર ચોથું છેદસૂત્ર પાંચમું છેદસૂત્ર છટ્ટં છેદસૂત્ર પહેલું મૂલસુત્ર બીજું મૂલસુત્ર-૧ બીજું મૂલસુત્ર-૨ ત્રીજું મુલસૂત્ર

[૧૩૫] ઉત્તરજૂઝયણ -ગુજરાતી અનુવાદ [આગમદીપ-૭] ચોથું મૂલસુત્ર [૧૩૬] નંદીસુત્તં -ગુજરાતી અનુવાદ [આગમદીપ-૭] પહેલી ચૂલિકા [૧૩૭] અનુયોગદાર -ગુજરાતી અનુવાદ આગમદીપ-૭ો બીજી ચૂલિકા

પ્રકાશન ૯૧ થી ૧૩૭ આગમદીપ પ્રકાશને પ્રગટ કરેલ છે.

सटीकं-१०/११

| | | પ્રકાશન ૯૧ થા ૧૩૭ આગમદા | ન પ્રકાશન પ્રગ | ાટ કરલ છ |
|---|---------|--|---------------------------------------|-----------|
| | [૧૩૮] | દીક્ષા યોગાદિ વિધિ | · · · · · · · · · · · · · · · · · · · | |
| | [૧૩૯] | ૪૫ આગમ મહાપૂજન વિધિ | | |
| | [980] | आचाराङ्गसूत्रं सटीकं | आगमसुत्ताणि | सटीकं-१ |
| | [989] | सूत्रकृताङ्गसूत्रं सटीकं | आगमसुत्ताणि | सटीकं-२ |
| | [૧૪૨] | स्थानाङ्गसूत्रं सटीकं | आगमसुत्ताणि | सटीकं-३ |
| | [१४३] | समवायाङ्गसूत्रं सटीकं | आगमसुत्ताणि | सटीकं-४ |
| | [१४४] | भगवतीअङ्गसूत्रं सटीकं | आगमसुत्ताणि | सटीकं-५/६ |
| - | [૧૪५] | ज्ञाताधर्मकथाङ्गसूत्रं सटीकं | आगमसुत्ताणि | सटीकं-७ |
| | [१४६] | उपासकदशाङ्गसूत्रं सटीकं | आगमसुत्ताणि | सटीकं-७ |
| | [१४७] | अन्तवृद्दशाङ्गसूत्रं सटीकं | आगमसुत्ताणि | सटीकं-७ |
| | [१४८] | अनुत्तरोपपातिकदशाङ्गसूत्रं सटीकं | आगमसुत्ताणि | सटीकं-७ |
| | [१४९] | प्रश्नव्याकरणाङ्गसूत्रं सटीकं | आगमसुत्ताणि | सटीकं-७ |
| į | [१५०] | विपाकश्रुताङ्गसूत्रं सटीकं | आगमसुत्ताणि | सटीकं-८ |
| ĺ | [949] | औपपातिकउपाङ्गसूत्रं सटीकं | आगमसुत्ताणि | सटीकं-८ |
| İ | [94२] | राजप्रश्नियउपाङ्गसूत्रं सटीकं | आगमसुत्ताणि | सटीकं-८ |
| | [१५३] | जीवाजीवाभिगमउपाङ्गसूत्रं सटीकं | आगमसुत्ताणि | सटीकं-९ |
| | [948] | प्रज्ञापनाउपाङ्गसूत्रं सटीकं | आगमसुत्ताणि | सटीकं-१०/ |
| | [૧५५] | सूर्यप्रज्ञप्तिउपाङ्गसूत्रं सटीकं | आगमसुत्ताणि | सटीकं-१२ |
| | [૧५६] | चन्द्रप्रज्ञप्तिउपाङ्गसूत्रं सटीकं | आगमसुत्ताणि | सटीकं-१२ |
| - | [૧५७] | जम्बूद्वीवप्रज्ञप्तिउपाङ्गसूत्रं सटीकं | आगमसुत्ताणि | सटीकं-१३ |
| | [१५८] | निरयावलिकाउपाङ्गसूत्रं सटीकं | आगमसुत्ताणि | सटीकं-१४ |
| | १५९] | कल्पवतंसिकाउपाङ्गसूत्रं सटीकं | आगमसुत्ताणि | सटीकं-१४ |
| | 9६०] | पुष्पिताउपाङ्गसूत्रं सटीकं | आगमसुत्ताणि | सटीकं-१४ |
| | 9 ६ 9] | पुष्पचूलिकाउपाङ्गसूत्रं सटीकं | आगमसुत्ताणि | सटीकं-१४ |
| [| १६२] | वण्हिदसाउपाङ्गसूत्रं सटीकं | आगमसुत्ताणि | सटीकं-१४ |
| | १६३] | चतुःशरणप्रकीर्णकसूत्र सटीकं | आगमसुत्ताणि | सटीकं-१४ |
| [| १६४] | आतुरप्रत्याच्यानप्रकीर्णकसूत्रं सटीकं | आगमसुत्ताणि | |
| | १६५] | महाप्रत्याख्यानप्रकीर्णकसूत्रं सच्छायं | आगमसुत्ताणि | सटीकं-१४ |
| [| १६६] | भक्तपरिज्ञाप्रकीर्णकसूत्रं सच्छायं | आगमसुत्ताणि | सटीकं-१४ |
| | | | | |

| [१६७] | तंदुलवैचारिकप्रकीर्णकसूत्रं सटीकं | आगमसुत्ताणि सटीकं-१४ |
|-------|--------------------------------------|----------------------------|
| [१६८] | संस्तारकप्रकीर्णकसूत्रं सच्छायं | आगमसुत्ताणि सटीकं-१४ |
| [१६९] | गच्छाचारप्रकीर्णकसूत्रं सटीकं | आगमसुत्ताणि सटीकं-१४ |
| [900] | गणिविद्याप्रकीर्णकसूत्रं सच्छायं | आगमसुत्ताणि सटीकं-१४ |
| [9७9] | देवेन्द्रस्तवप्रकीर्णकसूत्रं सच्छायं | आगमसुत्ताणि सटीकं-१४ |
| [१७२] | मरणसमाधिप्रकीर्णकसूत्रं सच्छायं | आगमसुत्ताणि सटीकं-१४ |
| [६७६] | निशीयछेदसूत्रं सटीकं | आगमसुत्ताणि सटीकं-१५-१६-१७ |
| [१७४] | बृहत्कल्पछेदसूत्रं सटीकं | आगमसुत्ताणि सटीकं-१८-१९-२० |
| [૧७५] | व्यवहारछेदसूत्रं सटीकं | आगगम सुत्ताणि सटीकं-२१-२२ |
| [१७६] | दशाश्रुतस्कन्धछेदसूत्रं सटीकं | आगमसुत्ताणि सटीकं-२३ |
| [१७७] | जीतकल्पछेदसूत्रं सटीकं | आगमसुत्ताणि सटीकं-२३ |
| [୨७८] | महानिशीयसूत्रं (मूलं) | आगमसुत्ताणि सटीकं-२३ |
| [909] | आवश्यकमूलसूत्रं सटीकं | आगमसुत्ताणि सटीकं-२४-२५ |
| [920] | ओघनिर्युक्तिमूलसूत्रं सटीकं | आगम सुत्तामि सटीकं-२६ |
| [969] | पिण्डनियुक्तिमूलसूत्रं सटीकं | आगमसुत्ताणि सटीकं-२६ |
| [9८२] | दशवैकालिकमूलसूत्रं सटीकं | आगमसुत्ताणि सटीकं-२७ |
| [923] | उत्तराध्ययनमूलसूत्रं सटीकं | आगमसुत्ताणि सटीकं-२८-२९ |
| [१८४] | नन्दी-चूलिकासूत्रं सटीकं | आगमसुत्ताणि सटीकं-३० |
| [१८५] | अनुयोगद्वारचूलिकासूत्रं सटीकं | आगमसुत्ताणि सटीकं-३० |
| | | - |

પ્રકાશન ૧૩૯ થી ૧૮૫ આગમશુત પ્રકાશને પ્રગટ કરેલ છે.

–ઃ સંપર્ક સ્થળ :–

'આગમ આરાધના કેન્દ્ર' શીતલનાથ સોસાયટી-વિભાગ-૧, ફ્લેટ નં-૧૩, ૪થે માળે શ્રી નમિનાથ જૈન દેરાસરજી પાછળ, બ્હાઈ સેન્ટર, ખાનપુર અમદાવાદ-૧

''आगमसुत्ताणि-सटीकं'' ભાાગ १ थी उठ नुं विवरश

| आगमसुत्ताणि | समाविष्टाआगमाः | |
|--------------|---|--|
| भाग- 9 | आयार | |
| भाग-२ | सूत्रकृत | |
| भाग-३ | स्थान | |
| भाग-४ | समवाय | |
| भाग-५~६ | भगवती (अपरनाम व्याख्याप्रज्ञप्ति) | |
| भाग-७ | ज्ञाताधर्मकथा, उपासकदशा, अन्तकृद्दशा, अनुत्तरोपपातिकदशा, प्रश्नव्याकरण | |
| भाग-८ | विपाकश्रुत, औपपातिक, राजप्रश्निय | |
| भाग-९ | जीवाजीवाभिगम | |
| भाग-१०-११ | प्रज्ञापना | |
| भाग-१२ | सूर्यप्रज्ञप्ति, चन्द्रप्रज्ञप्ति | |
| भाग- 🤋 ३ | जम्बूद्वीपप्रज्ञित | |
| भाग- १४ | निरवायिलका, कल्पवतंसिका, पुष्पिका, पुष्पचूिलका वण्हिदशा, चतुःशरण, आतुरप्रत्याख्यान, महाप्रत्याख्यान, भक्तपरिज्ञा, तद्भुनैवारिक, संस्तारक, गच्छाचार, गणिविद्या, देकेद्रस्तव, मरणसमिध | |
| भाग-१५-१६-१७ | नीशीय | |
| भाग-१८-१९-२० | बृहत्करूप | |
| भाग-२१-२२ | व्यवहार | |
| भाग-२ ३ | दशाश्रुतस्कन्ध, जीतकल्प, महनिशीथ | |
| भाग-२४-२५ | आवश्यक | |
| भाग-२६ | ओघनिर्युक्ति, पिण्डनिर्युक्ति | |
| भाग-२७ | दशवैकालिक • | |
| भाग-२८-२९ | उत्तराध्ययन | |
| भाग-३० | नन्दी, अनुयोगद्वार | |

